अभिनव स्वस्ति

अभ्यास पुस्तिका

भाग 2

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

अभिनव स्वस्ति अभ्यास पुस्तिका

[एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा प्रतिपादित संस्कृत-पाठ्य-पुस्तक
"स्वास्ति" भाग—2 पर आधारित]

[कक्षा 6 के लिए]

लेखक
डॉ० माणिक गोविन्द चतुर्वेदी

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

शैक्षिक प्रकाशक
888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग़,
नई दिल्ली-110005. (भारत)

नाम ....

कक्षा .... सैक्शन ....

स्कूल ....

....

प्रकाशक :

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

शैक्षिक प्रकाशक

888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग़,

नई दिल्ली-110005. (भारत)

दूरभाष : कार्यालय : 519433, 526933
आवास : 562919, 561321

दूसरा संस्करण : 1983

मूल्य : 4/50 रुपये

कापीराइट : लेखकाधीन

मुद्रक :

पीताम्बर प्रिंटिंग प्रैस

41-42, बस्ती हरफूलसिंह,

दिल्ली-110006.

[दूरभाष : 512041]

अपनी बात

प्रस्तुत अभ्यास पुस्तिका माला संस्कृत की पाठ्य पुस्तकें स्वस्ति—१ से ४ भाग पर आधारित हैं। इनमें पाठ्य-पुस्तकों में दिए हुए भाषायी पाठ्य-बिन्दुओं के व्यावहारिक अभ्यास के लिए पाठ्य-पुस्तकों में दी हुई सामग्री के अतिरिक्त भी कुछ सामग्री का उपयोग किया गया है।

विभिन्न भाषा कौशलों को दृष्टि में रखते हुए हिन्दी से संस्कृत में और संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद कराया गया है। लिंग, वचन एवं विभक्ति के अनुसार कर्त्ता तथा क्रिया की संगति के अभ्यास के लिए रिक्त स्थानों की पूर्ति, सारिणी की सहायता से वाक्य रचना आदि पर प्रश्न दिए गए हैं। वाक्य रचना के अभ्यास के लिए वाक्य प्रयोग तथा वाक्य संशोधन पर भी प्रश्न हैं। शब्द रूप के अभ्यास के लिए भी प्रश्न दिए गए हैं। 'व्याकरण' भाग में शब्द रूप, धातु रूप और अव्यय भी दिए गए हैं।

आशा है कि प्रस्तुत अभ्यास पुस्तिकाएँ सहज ढंग से संस्कृत सीखने में विद्यार्थियों को सहायक होंगी। अतः ये उन्हें तथा उसके अध्यापकों को समर्पित हैं। विद्यार्थियों से हमारी प्रार्थना है कि प्रश्नों का उत्तर वे स्वयं लिखने का प्रयास करें। उत्तर न लिख सकने पर ही अध्यापकों से सहायता लें।

—लेखक

विषय-सूची

पाठ	विषय		पृष्ठ
प्रथमः	विद्या-महिमा	....	1
द्वितीयः	चतुरः काकः	....	3
तृतीयः	मूर्खमियम्	....	5
चतुर्थः	दया सर्वेष प्राणिषु	....	8
पंचमः	तपसा किं न सिद्धयति	....	10
षष्ठः	समवायो हि दुर्जयः	....	12
सप्तमः	नीतिश्लोकाः	....	15
अष्टमः	चतुरः वानरः	....	17
नवमः	भूपतिः मायादासः	....	19
दशमः	नद्यः	....	21
एकादशः	चाणक्यनीतिः	....	23
द्वादशः	लवकुशौ	....	25
त्रयोदशः	महेश्वरस्य पत्रम्	....	27
चतुर्दशः	नीतिमान् बालः	....	29
पञ्चदशः	द्वे मित्रे	....	31
षोडशः	कन्याकुमारी	....	33
सप्तदशः	न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्	....	35
अष्टादशः	विश्वासो नैव कर्त्तव्यः मधुरासु खलोक्तिषु	....	37
एकोनविंशः	वर्षाकालः	....	39
विंशः	दधीचेः औदार्यम्	....	41
एकविंशः	सुभाषितानि	....	43
द्वाविंशः	भारते भाति भारती	....	45
त्रयोविंशः	आभाणकाः	....	47
	व्याकरण भाग	....	49

प्रथमः पाठः

विद्या-महिमा

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) सर्वप्रधानम् धनम् किम् अस्ति ?

उत्तर..

(ख) संचयात् का क्षयमायाति ?

उत्तर..

(ग) विनयात् का याति ?

उत्तर..

(घ) स्वदेशे कः पूज्यते ?

उत्तर..

(ङ) सर्वत्र कः पूज्यते ?

उत्तर..

2. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ हिन्दी में लिखिए—

(क) न चौरहार्यं...सर्वधनं प्रधानम् ।

....

....

....

....

(ख) विद्वत्वं .... सर्वत्र पूज्यते ।

....

....

....

....

3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाएँ लगाइए—

(क) व्ययकृते विद्या .... ।

(ख) राजा स्वदेशे .... ।

(ग) विद्या भारकारि न .... ।

(घ) विद्वान् सर्वत्र .... ।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) विद्या अमूल्य धन है ।

....

(ख) विद्या विनय देती है ।

....

(ग) राजा की पूजा स्वदेश में होती है ।

....

(घ) विद्या से हीन मनुष्य नहीं पूजा जाता ।

....

(ङ) विद्या की महिमा सर्वत्र व्यापक है ।

....

द्वितीयः पाठः

चतुरः काकः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) पिपासितः काकः किम् अलभत ?

उत्तर..

(ख) काकः कस्य खण्डानि घटे अक्षिपत् ?

उत्तर..

(ग) काकः किम् अपिवत् ?

उत्तर..

(घ) कस्य प्रभावेण सः सफलः अभवत् ?

उत्तर..

2. कोष्ठकों में से उचित शब्द लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) काकः..अलभत । (घटम्, जलम्)

(ख) घटे...जलम् आसीत् । (अधिकम्, स्वल्पम्)

(ग) सः जलं पीत्वा...अलभत । (सुखम्, दुःखम्)

(घ) काकः...अभवत् । (असफलः, सफलः)

3. भूतकाल (लङ् लकार) के धातु-रूप लिखिए–

धातु	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क) अस्	प्रथम पुरुष	....	....	....

(ख) भू मध्यम पुरुष ....

(ग) दृश् उत्तम पुरुष ....

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) एक वन में एक प्यासा कौआ था।

....

....

(ख) उसने एक घड़ा देखा।

....

....

(ग) घड़े में थोड़ा जल था।

....

....

(घ) उसने जल पीकर सुख प्राप्त किया।

....

....

(ङ) हम परिश्रम से जीवन में सफल होते हैं।

....

....

तृतीयः पाठः

मूर्खमित्रम्

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) नृपस्य मित्रं कः आसीत् ?

उत्तर..

(ख) एकदा कः सुप्तः आसीत् ?

उत्तर..

(ग) मक्षिका पुनः पुनः आगत्य कुत्र उपाविशत् ?

उत्तर..

(घ) कैः सह मित्रता नोचिता अस्ति ?

उत्तर..

2. कोष्ठकों में से उचित शब्द चुनकर वाक्य पूर्ति कीजिए—

(क) तस्य भवने बहवः..आसन्। (नराः, पशवः)

(ख) सः..व्यजनेन तम् अवीजयत्। (नरः, वानरः)

(ग) सा..................पुनः पुनः आगत्य तत्रैव अतिष्ठत्। (मक्षिका, बालिका)

(घ) खड्ग प्रहारेण नृपस्य..............................छिन्ना अभवत्। (भुजा, नासिका)

3. मोटे शब्दों का एकवचन में प्रयोग करके उसी के अनुसार क्रिया लगाइये—

(क) तस्य भवने **बहवः पशवः** आसन्।

प्रयोग..

(ख) ते नृपस्य सेवाम् अकुर्वन् ।

प्रयोग..

(ग) वानराः वृक्षेषु वसन्ति ।

प्रयोग..

(घ) वयम् विद्यालयेषु पठामः ।

प्रयोग..

4. सन्धि कीजिए—

(क) उप+अविशत्.. ।

(ख) तत्र+एव... ।

(ग) न+उचिता... ।

(घ) पशुषु+एकः... ।

5 निम्नलिखित शब्दों के प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में तीनों वचनों में रूप लिखिए—

शब्द	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नृप	प्रथमा	....	....	....
	द्वितीया	....	....	....
नर	प्रथमा	....	....	....
	द्वितीया	....	....	....
वानर	प्रथमा	....	....	....
	द्वितीया	....	....	....
पशु	प्रथमा	....	....	....
	द्वितीया	....	....	....

फल	प्रथमा	....	....	....
	द्वितीया	....	....	....
जल	प्रथमा	....	....	....
	द्वितीया	....	....	....

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) एक नगर में एक निर्धन मनुष्य रहता था।

....

....

(ख) बन्दर महल में रहते थे।

....

....

(ग) मक्खी राजा की नाक पर बैठ गई।

....

....

(घ) उसने डण्डे से प्रहार किया।

....

....

(ङ.) दुर्जनों के साथ मित्रता उचित नहीं है।

....

....

चतुर्थः पाठः

दया सर्वेषु प्राणिषु

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) देवदत्तः आपणे कम् अपश्यत् ?

उत्तर..

(ख) एकस्मिन् पञ्जरे कति शुकाः आसन् ?

उत्तर..

(ग) सर्वेषां शुकानां किं मूल्यं अस्ति ?

उत्तर..

(घ) परमः धर्मः कः अस्ति ?

उत्तर..

2. **सन्धि-विच्छेद कीजिए—**

(क) एकेनैव—..।

(ख) समागच्छन्—..।

(ग) यदीदृशी—..।

(घ) पञ्जरबन्धस्ते—..।

3. **निम्नलिखित धातुओं के लङ् लकार में रूप लिखिए—**

धातु	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क) दृश्	प्रथम पुरुष	....	....	....
(ख) पृच्छ्	मध्यम पुरुष	....	....	....

(ग) लिख् उत्तम पुरुष ....

(घ) वद् प्रथम पुरुष ....

4. निम्नलिखित धातुओं में क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए—

वाक्य

(क) दृश्+त्वा .... ।

(ख) क्री+त्वा .... ।

(ग) मुच्+त्वा .... ।

(घ) गम्+त्वा .... ।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) वह पिता के साथ गाँव गया ।

....

(ख) इस वृक्ष पर तीन तोते हैं ।

....

(ग) तुम सब दयालु हो ।

....

(घ) इस पुस्तक का क्या मूल्य है ?

....

(ङ) तोतों को आकाश में छोड़ दो ।

....

पञ्चमः पाठः

तपसा किं न सिद्ध्यति

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) कस्मिन् काले पार्वती दिवा अग्निभिः परिवृता सूर्यम् अवलोकयति स्म ?
उत्तर ....

(ख) हेमन्ते पार्वती किम् अकरोत् ?
उत्तर ....

(ग) शिवस्य कति नेत्राणि सन्ति ?
उत्तर ....

(घ) पार्वती शिवनिन्दां श्रुत्वा किम् अवदत् ?
उत्तर ....

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

(क) पार्वती शीतले जले आकण्ठं निमग्ना ....।

(ख) द्वौ छात्रौ विद्यालयं ....।

(ग) महेश्वरस्य अलौकिकं .... त्वं न जानासि।

(घ) एकदा कश्चित् .... तपोवनं प्राविशत्।

3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार ल्यप् प्रत्यय लगाकर शब्द लिखिए—

आ+दा+ल्यप्=आदाय।

(क) आ+गम्+ल्यप्= ....।

(ख) उत्+स्था+ल्यप्= ....।

(ग) वि+हा+ल्यप्= ....।

(घ) परि+त्यज्+ल्यप्= ....।

4. **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

	अर्थ	वाक्य
(क) आकण्ठम् निमग्ना	....	..............................।
(ख) तूष्णीम्	....	..............................।
(ग) भस्मलिप्तं शरीरम्	....	..............................।
(घ) देदीप्यमानम्	....	..............................।
(ङ) कौतूहलेन	....	..............................।

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) ग्रीष्म काल में वह श्रीनगर जाता है।
....

(ख) शिव हिमालय पर रहते हैं।
....

(ग) शिव का मुख देदीप्यमान था।
....

(घ) वटु ने शिव की निन्दा की।
....

(ङ) वटु ने पार्वती से तप का कारण पूछा।
....

(च) अन्त में शिव प्रसन्न हो गये।
....

(छ) शैव शिव की उपासना करते हैं।
....

षष्ठ: पाठ:

समवायो हि दुर्जय:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) प्रमत्तः गजः किम् अकरोत् ?

उत्तर...

(ख) चटकायाः नीडं कुत्र अपतत् ?

उत्तर...

(ग) काष्ठकूटः नाम खगः दुःखेन ताम किमपृच्छत् ?

उत्तर...

(घ) मण्डूकस्य किम् अभिधानम् अस्ति ?

उत्तर...

2. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

(क) परमैश्वर्यम् —...।

(ख) वधेनैव—...।

(ग) यथोचितं—...।

(घ) तस्मिन्नेव—..।

3. निम्नलिखित धातुओं के लृट् लकार में रूप लिखिए—

	धातु	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)	कृ	प्रथम पुरुष	....	....	....
(ख)	गम्	मध्यम पुरुष	....	....	....

(ग) पत् उत्तम पुरुष ....

(घ) वद् मध्यम पुरुष ....

(ङ.) भू उत्तम पुरुष ....

(च) पृच्छ् प्रथम पुरुष ....

4. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—**

(क) चटकाया: नीडं भुवि अपतताम् ।
....

(ख) भद्रे, किमर्थम् विलपति ?
....

(ग) मार्गे गर्तस्य अन्तिके स्थितः अहमपि शब्दं करिष्याव: ।
....

(घ) स: तस्मिन्नेव गर्ते पारीष्यत: ।
....

5. **'चटका' शब्द के रूप लिखिए—**

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क) प्रथमा	....	....	....
(ख) द्वितीया	....	....	....
(ग) चतुर्थी	....	....	....
(घ) सप्तमी	....	....	....

6. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) तू वन में कब जायेगा ?

....

....

(ख) वह गौएँ वहाँ चरायेगा ।

....

....

(ग) हम दोनों आज काम नहीं करेंगे ।

....

....

(घ) मैं कल बाजार जाऊँगा ।

....

....

(ङ) छात्र विद्यालय में पाठ पढ़ेंगे ।

....

....

सप्तमः पाठः

नीतिश्लोकाः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) कदर्यं केन जयेत् ?

उत्तर ....

(ख) कः अनाहूतः प्रविशति ?

उत्तर ....

(ग) केन सह मित्रता न कुर्यात् ?

उत्तर ....

(घ) के के प्रमुखाः दोषाः सन्ति ?

उत्तर ....

2. निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अर्थ लिखिए—

(क) अक्रोधेन जयेत् .... चानृतम् ।

....

....

....

....

(ख) अनाहूतः .... नराधमः ।

....

....

....

(ग) दुर्जनः .... भयङ्करः

....

....

....

3. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

(क) कदमम् ....

(ख) नराधमः ....

(ग) दुर्जनः ....

(घ) तादृशं ....

(ङ) अनाहूतः ....

4. विपरीतार्थक शब्द लिखिए—

(क) क्रोधम् = ...।

(ख) अनृतम् = ...।

(ग) दुर्जनः = ...।

(घ) दोषाः = ...।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) क्रोध कैसे जीतना चाहिए ?

....

(ख) मनुष्य को अपने दोष त्याग देने चाहिए।

....

(ग) छात्रों को गुरुओं को प्रणाम करना चाहिए।

....

(घ) सब मनुष्य सुखी हों।

....

(ङ) यह आपका घर है।

....

अष्टमः पाठः

चतुरः वानरः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) चतुरः वानरः कुत्र अवसत् ?
उत्तर—..

(ख) सः वृक्षे किम् अखादत् ?
उत्तर—..

(ग) वानरः स्वप्राणान् रक्षितुं मकरं किम् अवदत् ?
उत्तर—..

(घ) तयोः मैत्री कथं समाप्ता अभवत् ?
उत्तर—..

2. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति तथा वचन लिखिए—

शब्द	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तटे	....	....	....	....
फलानि	....	....	....	....
पत्नयै	....	....	....	....
तानि	....	....	....	....
जले	....	....	....	....
कोटरे	....	....	....	....

3. 'फल' शब्द के रूप लिखिए—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	....	....	....
द्वितीया	....	....	....

चतुर्थी	....	....	....
षष्ठी	....	....	....
सप्तमी	....	....	....

4. निम्नलिखित धातुओं के साथ निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर रूप लिखिए—

	धातु		प्रत्यय		शब्द
(क)	दा	+	तुमुन्	=	....
(ख)	पठ्	+	क्त्वा	=	....
(ग)	खाद्	+	तुमुन्	=	....
(घ)	आ+गम्	+	ल्यप	=	....

5. वाक्य पूर्ति कीजिए—

(क) एकस्मिन् नदीं तटे एकः .... आसीत् ।

(ख) तानि फलानि .... तस्य जाया अचिन्तयत् ।

(ग) विवशः मकरः .... गत्वा वानरमवदत् ।

(घ) अतः परम् .... मैत्री समाप्ता ।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) वह प्रतिदिन मीठे जामुन खाता था ।

....

(ख) वृक्ष पर बन्दर रहते थे ।

....

(ग) यह फल बहुत मीठा है ।

....

(घ) बन्दर वृक्ष पर चढ़ गया ।

....

(ङ) मगरमच्छ ने बन्दर के साथ अनुचित व्यवहार किया ।

....

□ □ □

नवमः पाठः

भूपतिः मायादासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) मायादासः कथं जीवितं नयति स्म ?
उत्तर— ....

(ख) मायादासस्य प्रासादम् कः आगच्छत् ?
उत्तर— ....

(ग) मायादासेन स्पृष्टं जलम् कीदृशं अभवत् ?
उत्तर— ....

(घ) दुःखस्य किम् कारणम् अस्ति ?
उत्तर— ....

2. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

(क) तत्रैव ....।

(ख) तथास्तु— ....।

(ग) साधूक्तं= ....।

(घ) शोकेनोच्चैः= ....।

3. निम्नलिखित शब्दों में धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिए—

शब्द	धातु	लकार	पुरुष	वचन
(क) भवन्तु	....	....	....	....
(ख) अस्पृशत्	....	....	....	....
(ग) न्यवेदयत्	....	....	....	....
(घ) आसीत्	....	....	....	....

4. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए—

शब्द	**वाक्य**
(क) लब्धः	....
(ख) पिपासा	....
(ग) प्रत्यक्षः	....
(घ) जीवितम्	....

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(क) एकदा कोऽपि मुनिः मायादासस्य प्रासादम् आगच्छन् ।
शुद्ध वाक्य—..

(ख) ततः नृपस्य महान् पिपासा जाता ।
शुद्ध वाक्य—..

(ग) तद् दृष्ट्वा कुमारी दुःखिता अभवताम् ।
शुद्ध वाक्य—..

(घ) अयम् कुमारी मम जीवितम् ।
शुद्ध वाक्य—..

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) वह उद्यान से जल लाया ।
....

(ख) उसने पर्याप्त जल पिया ।
....

(ग) मुनि आश्रम में रहता है ।
....

(घ) लोभ दुःख का मूल कारण है ।
....

(ङ) हमारे विद्यालय में अनेक छात्र पढ़ते हैं ।
....

□ □ □

दशमः पाठः

नद्यः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) के नदीनां सत्कारं कुर्वन्ति ?

उत्तर—..

(ख) नद्यः कस्मात् उत्पन्नाः भवन्ति ?

उत्तर—..

(ग) नदीभ्यः के प्रमुखाः लाभः सन्ति ?

उत्तर—..

(घ) जलाभावात् का हानिः भवति ?

उत्तर—..

2. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए—

शब्द	विभक्ति	वचन
(क) गिरयः	....	....
(ख) क्षेत्राणि	....	....
(ग) नद्यः	....	....
(घ) देशस्य	....	....

3. निम्नलिखित विभक्तियों तथा वचनों में 'नदी' शब्द के रूप लिखिए—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीया	....	....	....

चतुर्थी	…………	…………	…………
षष्ठी	…………	…………	…………
सप्तमी	…………	…………	…………

4. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—**

(क) जलाशय = …………………………………………………………।

(ख) सत्कार = …………………………………………………………।

(ग) गङ्गा = …………………………………………………………।

(घ) गिरि = …………………………………………………………।

5. **सन्धि कीजिए—**

(क) अति+उन्नता: = …………………………………………………………।

(ख) शासन+अधिकारिण: = …………………………………………………………।

(ग) जल+अभावात् = …………………………………………………………।

(घ) जले+अस्मिन् = …………………………………………………………।

6. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) भारत एक विशाल देश है।

…………………………………………………………

(ख) पर्वतों से नदियाँ निकलती हैं।

…………………………………………………………

(ग) राम की पत्नी सीता थी।

…………………………………………………………

(घ) भारत में बहुत सी नदियाँ हैं।

…………………………………………………………

(ङ) मेरा भाई इस विद्यालय में पढ़ता है।

…………………………………………………………

□ □ □

एकादशः पाठः

चाणक्यनीतिः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—**

(क) सर्वश्रेष्ठः धर्मः कः अस्ति ?
उत्तर—..।

(ख) शास्त्रपूतं किम् वदेत् ?
उत्तर—..।

(ग) कस्य पिता वैरी अस्ति ?

उत्तर—..।

(घ) सभामध्ये कः न शोभते ?
उत्तर—..।

2. **निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ अपनी भाषा में लिखिए—**

(क) शान्ति तुल्यं...दया परः ।

....

....

....

(ख) तावद्...यथोचितम् ।

....

....

....

(ग) रूपयौवनसम्पन्ना .... किंशुका: ।

....

....

....

3. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

(क) नास्ति = ... ।

(ख) व्याधिर्न = ... ।

(ग) यथोचितम् = ... ।

(घ) भयमनागतम् = ... ।

4. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए—

शब्द	**वाक्य-**
(क) यथा	.... ।
(ख) इव	.... ।
(ग) व्याधि:	.... ।
(घ) किंशुका:	.... ।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) शान्ति सबसे बड़ा तप है ।

....

(ख) हमें सदा शुद्ध जल पीना चाहिए ।

....

(ग) गोपाल विद्यालय में अपने गुरुजी को प्रणाम करता है ।

....

(घ) परिश्रमी छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं ।

....

(ङ) सभा में विद्याहीन शोभा नहीं पाते ।

....

□ □ □

द्वादशः पाठः

लवकशौ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) अयोध्यायाः नृपः कः आसीत् ?
उत्तर—..

(ख) लवकुशौ कुत्र अवसताम् ?
उत्तर—..

(ग) श्रीरामस्य भार्या का आसीत् ?
उत्तर—..

(घ) चन्द्रकेतुः कः आसीत् ?
उत्तर—..

2. निम्नलिखित शब्दों में विभक्तियाँ लगाइए—

(क) लक्ष्मण का=..।

(ख) आश्रम में=..।

(ग) युद्ध के लिए=..।

(घ) गुरु के=..।

(ङ) मध्य में=..।

3. सन्धि कीजिए—

(क) बाल्य+अवस्थायां=..।

(ख) अनु+अगच्छत्=..।

(ग) तत्र+आगत्य = ...।

(घ) कस्य+अपि = ...।

4. निम्नलिखित वाक्यों में उचित कर्त्ता लगाइए—

(क) .... अयोध्यायाः नृपः आसीत् ।

(ख) .... वाल्मीकि शिष्याः वीराः निर्भयाः च स्म ।

(ग) अनन्तरम् .... तत्रागत्य तौ अकथयत् ।

(घ) .... श्रीरामस्य पादयोः अपतताम् ।

5. निम्नलिखित शब्दों में धातु तथा प्रत्यय प्रथक्-प्रथक् लिखिए—

(क) गृहीत्वा = ...।

(ख) आगत्य = ...।

(ग) ज्ञात्वा = ...।

(घ) सोढुम् = ...।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) चन्द्रकेतु लक्ष्मण का पुत्र था ।

....

(ख) श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञ किया ।

....

(ग) सीता वाल्मीकि के आश्रम में रहती थीं ।

....

(घ) लवकुश ने चन्द्रकेतु को हराया ।

....

(ङ) राजा दशरथ के चार पुत्र थे ।

....

त्रयोदशः पाठः

महेश्वरस्य पत्रम्

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) कः अस्माकं विद्यालयं दृष्ट्वा अतीव हृष्टः ?

उत्तर—..

(ख) नित्यकर्म कृत्वा किम् पातव्यम् ?

उत्तर—..

(ग) कः निःसंशयं दीर्घायुः भवति ?

उत्तर—..

(घ) अन्ते पत्रे किम् लेखितव्यम् ?

उत्तर—..

2. निम्नलिखित धातुओं में तव्यत् प्रत्यय लगाकर अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—

धातु	तव्यत् प्रत्यय	वाक्य
(क) पठ्	....	....
(ख) पा	....	....
(ग) लिख्	....	....
(घ) गम्	....	....
(ङ) नम्	....	....

3. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

(क) अद्यारभ्य—..।

(ख) अद्यापि—..।

(ग) विद्यालये—..।

(घ) महेश्वरः—..।

4. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—**

(क) छात्राः आचार्यात् पठामः ।

शुद्ध वाक्य— ....

(ख) त्वम् तदेव अनुसरामि ।

शुद्ध वाक्य— ....

(ग) सीता उमायाः चतुरा स्तः ।

शुद्ध : ....

(घ) श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रसन्ना भविष्यतः ।

शुद्ध वाक्य— ....

5. **निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए—**

शब्द	**वाक्य**
(क) पुस्तकम्	....
(ख) प्रतिदिनम्	....
(ग) दैनन्दिनी	....
(घ) पठितव्यम्	....

6. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) दूध शरीर का पोषण करता है ।

....

(ख) मैं पिता को सादर प्रणाम करता हूँ ।

....

(ग) मेरी वार्षिक परीक्षा समाप्त हो गई ।

....

(घ) पर्वतों पर आरोग्यप्रद वायु है ।

....

(ङ.) वह विद्या का अध्ययन कर देश की सेवा करेगा ।

....

□ □ □

चतुर्दशः पाठः

नीतिमान् बालः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) अनाथां विधवां कः अकारणम् अपीडयत् ?
उत्तर—..

(ख) नृपतीनाम् का नीतिः अस्ति ?
उत्तर—..

(ग) कः दण्डनीयः अस्ति ?
उत्तर—..

(घ) कस्य शौर्यकथाः अस्मासु उत्साहं प्रीतिं च वर्धयन्ति ?
उत्तर—..

2. सन्धि कीजिए—

(क) तत्र+अनयन् = ...।

(ख) ग्राम+अधिकृतः = ...।

(ग) तूष्णीम्+अतिष्ठत् = ...।

(घ) नृपतीनां+इयं = ...।

3. निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति लङ् लकार के रूप लगाकर कीजिए—

(क) त्वमपराधम् न ....।

(ख) सः निराशः ....।

(ग) वयम् विद्यालयं ....।

(घ) सर्वे जनाः विस्मिताः ....।

4. ह्यः, श्वः तथा परश्वः का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए—

शब्द	वाक्य
(क) ह्यः	....।
(ख) श्वः	....।
(ग) परश्वः	....।

5. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति, लिंग और वचन लिखिए—

शब्द	विभक्ति	लिंग	वचन
(क) तरोः	....	....	....
(ख) धर्मेण	....	....	....
(ग) कुमारात्	....	....	....
(घ) दीनेषु	....	....	....

6 संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) शिवाजी दीनों पर दया करते थे।

....

(ख) राम की धर्म में निष्ठा है।

....

(ग) अपराधी को दण्ड देना चाहिए।

....

(घ) जवाहरलाल की देशभक्ति प्रसिद्ध है

....

(ङ) शिवाजी की शौर्य कथाएँ हमारे उत्साह को बढ़ाती हैं।

....

□ □ □

पञ्चदशः पाठः

द्वे मित्रे

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) गोपालस्य मित्रस्य अभिधानम् किम् अस्ति ?

उत्तर—..

(ख) तौ कुत्र अगच्छताम् ?

उत्तर—..

(ग) केन् पञ्चविंशतिः फलानि क्रीतानि ?

उत्तर—..

(घ) सुरेशस्य माता सहर्षम् किम् अवदत् ?

उत्तर—..

2. सन्धि कीजिए—

(क) प्रति+अवदत्= ....।

(ख) फलानि+अपि= ....।

(ग) होरा+अर्धेन= ....।

(घ) वाहकः+अपि= ....।

3. निम्नलिखित अंकों को संस्कृत में लिखिए—

(क) ४ ....

(ख) ६ ....

(ग) ३५ ....

(घ) ६० ....

4. निम्नलिखित वाक्यों में संख्यावाची शब्द लिखिए—

(क) सुरेशेन .... फलानि क्रीतानि ।

(ख) अष्ट-अष्ट च .... भवन्ति ।

(ग) रामस्य उद्याने .... वृक्षाः सन्ति ।

(घ) अधुना .... वादन-समयः अस्ति ।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) भौरें के कितने पैर होते हैं ?

....

(ख) हमारे विद्यालय में चालीस अध्यापक हैं ।

....

(ग) आज हरि ने तीन पुस्तकें खरीदीं ।

....

(घ) मेरे उद्यान में सौ पेड़ हैं ।

....

(ङ.) रावण के दस मुख और बीस हाथ थे ।

....

□ □ □

षोडश: पाठः

कन्याकुमारी

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) कन्याकुमारी भारतस्य कस्मिन् प्रदेशे स्थितः अस्ति ?
उत्तर—..

(ख) कस्य महापुरुषस्य स्मारकम् तत्र अस्ति ?
उत्तर—..

(ग) देवी मन्दिरं कुत्र अस्ति ?
उत्तर—..

(घ) समुद्रतीरं कीदृशम् स्थानं भवति ?
उत्तर—..

2. **निम्नलिखित धातुओं में अनीयर् प्रत्यय लगाकर अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—**

धातु	प्रत्यय सहित	वाक्य प्रयोग
(क) कृ	....	....
(ख) गम्	....	....
(ग) स्मर्	....	....
(घ) वृध्	....	....

3. **निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए—**

शब्द	वाक्य
(क) पावनम्—	....
(ख) रमणीयम्—	....

(ग) मनोहरम्— ....

(घ) सङ्गति— ....

4. निम्नलिखित शब्दों की विभक्तियाँ और वचन लिखिए—

शब्द	विभक्ति	वचन
(क) भारतस्य	....	....
(ख) दिशायां	....	....
(ग) सज्जनैः	....	....
(घ) नरौ	....	....

5. सन्धि कीजिए—

(क) पावनम्+इदं= ....

(ख) सूर्य+अस्तम्= ....

(ग) चन्द्र+उदयः= ....

(घ) मनः+हरम्= ....

(ङ) परिवृत+इदम्= ....

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) छात्रों को परिश्रम करना चाहिए ।

....

(ख) शिशु को अधिक सोना चाहिए ।

....

(ग) कन्याकुमारी पावन तीर्थ-स्थान है ।

....

(घ) यह मण्डप देखने योग्य है ।

....

(ङ) उनके सन्देश सुनने योग्य हैं ।

....

सप्तदशः पाठः

न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) एकः जीर्णः कूपः कुत्र आसीत् ?

उत्तर—..

(ख) कस्य दुर्व्यवहारेण भेकाः रुष्टाः जाता ?

उत्तर—..

(ग) कस्मात् गंङ्गदत्तस्य परिभवः अभवत् ?

उत्तर—..

(घ) सर्पराजः कूपे किम् अकरोत् ?

उत्तर—..

2. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

शब्द	वाक्य
(क) गर्वितः	....
(ख) आगत्य	....
(ग) बुभुक्षितः	....
(घ) जलाशयात्	....

3. निम्नलिखित शब्दों के रूप लिखिए—

शब्द	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क) दुष्ट	प्रथमा	....	....	....
	द्वितीया	....	....	....
	चतुर्थी	....	....	....

(ख) गृह	षष्ठी	....	....	....
	सप्तमी	....	....	....
(ग) मार्ग	द्वितीया	....	....	....
	तृतीया	....	....	....
	चतुर्थी	....	....	....
	सप्तमी	....	....	....

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में 'खाद्' धातु का उपयुक्त रूप लिखिए—

(क) सर्पराजः भेकान् ....

(ख) वयम् भोजनम् ....

(ग) त्वम् कदा ....

(घ) ह्यः यूयम् भोजनम् न ....

(ङ) सः नवनीतम् ....

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) गङ्गदत्त कहाँ रहता था ?

....

(ख) उसके परिजन कुएँ में रहते हैं।

....

(ग) भक्ष्य और भक्षक के मध्य मैत्री नहीं होती।

....

(घ) गङ्गदत्त बाहर आकर बहुत प्रसन्न हुआ।

....

(ङ) वह किस कारण से दुःखी था ?

....

अष्टादशः पाठः

विश्वासो नैव कर्तव्यः मधुरासु खलोक्तिषु

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) प्रबुद्धः सिंहः किम् अपश्यत् ?
उत्तर—...

(ख) मार्जारः कस्य शत्रुः अस्ति ?
उत्तर—...

(ग) सिंहः केन सह गुहामगच्छत् ?
उत्तर—...

(घ) मूषकः कदा बिलात् निरगच्छत् ?
उत्तर—...

2. निम्नलिखित के सही जोड़े बनाकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

वाक्य

(क) अहम्—पठामः ....।

(ख) मार्जारः—प्रतिवसति स्म ....।

(ग) सिंहः—वत्स्यामि ....।

(घ) वयम्—भक्षयिष्यति ....।

3. सन्धि-विच्छेद कीजिए—

(क) मार्जारमपश्यत्= ....।

(ख) किमर्थम्= ....।

(ग) इत्यकथयत्= ....।

(घ) इत्युक्त्वा = ...।

(ङ) तदाकर्ण्य = ...।

4. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—**

(क) मूषक: आहारं विना क्षीण: अभवताम् ।
शुद्ध वाक्य—..।

(ख) त्वम् आहारं विना कथं जीविष्यामि ?
शुद्ध वाक्य—..?

(ग) सिंह: किम् कथयत: स्म ?
शुद्ध वाक्य—..?

(घ) सिंह: आखेटाय वनं अगच्छन् ।
शुद्ध वाक्य—..?

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) राम अपनी पुस्तक पढ़ेगा ।
....

(ख) उसने युद्ध में शत्रुओं को हरा दिया ।
....

(ग) बालक मैदान में दौड़ेगा ।
....

(घ) चूहे बिल्ली से डरते हैं ।
....

(ङ) हम दोनों बाज़ार जायेंगे ।
....

एकोनविंश: पाठ:

वर्षाकाल:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) ग्रीष्म: ऋतु: कयो: मासयो: भवति ?

उत्तर—..

(ख) प्रथमवर्षाया: जलं पीत्वा का तुष्यति ?

उत्तर—..

(ग) वर्षा काले कीदृशं दृश्यं भवति ?

उत्तर—..

(घ) बालमीकि: रामायणे वर्षर्तो: किं वर्णनम् अकरोत् ?

उत्तर—..

2. निम्नलिखित धातुओं के मध्यम पुरुष लट् लकार में रूप लिखिए—

धातु	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क) पा	....	....	....
(ख) भू	....	....	....
(ग) दृश्	....	....	....
(घ) हृ	....	....	....

3. निम्नलिखित शब्दों के रूप लिखिए—

शब्द	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन
(क) ऋतु	तृतीया	....	....

(ख) नदी	षष्ठी	....	....
(ग) लता	चतुर्थी	....	....
(घ) श्री	सप्तमी	....	....

4. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

शब्द	वाक्य
(क) वर्षा	....
(ख) रक्षाबन्धनं	....
(ग) नव पल्लवानि	....
(घ) प्रसन्नाः	....

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) वर्षा ऋतु में जन्माष्टमी का उत्सव होता है।

....

(ख) तालाबों में कमल खिलते हैं।

....

(ग) वर्षा ऋतु में नदियाँ वेग से बहती हैं।

....

(घ) साधु लोग वर्षा ऋतु में एक स्थान पर रहते हैं।

....

(ङ) अति वर्षा से हानि होती है।

....

विंशः पाठः

दधीचेः औदार्यम्

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) देवाः कम् समीपं उपागच्छन् ?

उत्तर—..

(ख) वृत्रासुरः कस्मान् अपीडयत् ?

उत्तर—..

(ग) सर्वे देवाः कस्य तपोवनमगच्छन् ?

उत्तर—..

(घ) किमर्थं इदं शरीरम् अस्ति ?

उत्तर—..

2. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

शब्द	वाक्य प्रयोग
(क) भीताः	....
(ख) रक्षितुं	....
(ग) भृशम्	....
(घ) अस्थीनि	....

3. निम्नलिखित धातुओं में तुमुन् प्रत्यय लगाकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

धातु	तुमुन्	वाक्य
(क) रक्ष्	....	....

(ख) हन् ....

(ग) ज्ञा ....

(घ) नम् ....

4. बहुवचन में दिए गए धातु-रूपों के एकवचन तथा द्विवचन में रूप लिखिए—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)	....	....	गच्छन्ति ।
(ख)	....	....	भवत ।
(ग)	....	....	यच्छत ।
(घ)	....	....	कुर्वन्तु ।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) बालको ! उपवन में जाओ ।

....

(ख) निर्धनों को वस्त्र दो ।

....

(ग) राम ने युद्ध में रावण को मार दिया ।

....

(घ) पिता पुत्र को पारितोषिक देता है ।

....

(ङ) दधीचि ने अपनी अस्थियाँ देवताओं को दीं ।

....

एकविंशः पाठः

सुभाषितानि

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) दुर्जनः कदा दशति ?
उत्तर—..

(ख) लोके का शीतला अस्ति ?
उत्तर—..

(ग) तृप्तस्य भोजनं कथम् वृथा अस्ति ?
उत्तर—..

(घ) सुजनः किं करोति ?
उत्तर—..

2. वाक्य-पूर्ति कीजिए—

(क) समुद्रेषु.. ......वृथा अस्ति ।

(ख) तृप्तस्य भोजनं...अस्ति ।

(ग) दुर्जनः...दशति ।

(घ) साधुसङ्गतिः...भवति ।

3. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ लिखिए—

(क) खलः...पश्यति ।

....

....

....

(ख) चन्देनं .... साधुसङ्गतिः ।

....

....

....

(ग) वृथा वृष्टि .... दिवापि च ।

....

....

....

4. दश् धातु के रूप लट् लकार में लिखिए—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	....	....	....
मध्यम पुरुष	....	....	....
उत्तम पुरुष	....	....	....

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) दुर्जन दूसरों के दोष देखते हैं ।

....

(ख) सत्सङ्गति मनुष्य के दुर्गुणों को दूर करती है ।

....

(ग) वर्षा अन्न के लिए लाभदायक है ।

....

(घ) हमें दूसरों के गुण देखने चाहिए ।

....

(ङ) दुष्टों पर विश्वास न करो ।

....

द्वाविंशः पाठः

भारते भाति भारती

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—**

(क) भारतवर्षस्य संस्कारभाषा का अस्ति ?

उत्तर—..

(ख) लोकसभाध्यक्षस्य आसनस्योपरि किं लिखितम् ?

उत्तर—..

(ग) संस्कृतभाषायाः केषांचित् त्रयाणां कवीनां नामानि लिखत ?

उत्तर—..

(घ) कस्मिन् देशे भारति भाति ?

उत्तर—..

2. **सन्धि कीजिए—**

(क) इति+एषः= ....

(ख) आसनस्य+उपरि= ....

(ग) उत्+लिखिता= ....

(घ) इति+अयं= ....

3. **निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति, वचन तथा लिंग बताइये—**

शब्द	विभक्ति	वचन	लिंग
(क) विभागस्य	....	....	....
(ख) अनेकासु	....	....	....
(ग) एतेषां	....	....	....
(घ) हस्तयोः	....	....	....
(ङ) भित्तिकायां	....	....	....

4. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए—

शब्द	वाक्य
(क) निरन्तरम्	....
(ख) सुप्रसिद्ध :	....
(ग) सह	....
(घ) अपि	....

5. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति लगा कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) लक्ष्मणः......................................सह वनं अगच्छत् । (राम)

(ख) ....अभितः नदी वहति । (ग्राम)

(ग) पिता......................................क्रुध्यति । (पुत्र)

(घ) वृक्षात्......................................पतन्ति । (फल)

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) संस्कृत भारत की प्राचीन भाषा है ।

....

(ख) संस्कृत भाषा में विपुल साहित्य है ।

....

(ग) बालक सिंह से डरते हैं ।

....

(घ) धर्म के बिना कल्याण नहीं होता ।

....

(ङ) यह कलम उस बालक को दे दो ।

....

त्रयोविंश पाठः

आभाणका:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) केषां वयः न समीक्ष्यते ?

उत्तर—..

(ख) शठे कथं समाचरेत् ?

उत्तर—..

(ग) का कार्यसाधिका भवति ?

उत्तर—..

(घ) दूरतः काः रम्याः सन्ति ?

उत्तर—..

2. निम्नलिखित सूक्तियों की व्याख्या कीजिए—

(क) न रत्नमन्विष्यति...हि तत् ।

....

....

(ख) हितं...वचः ।

....

....

(ग) न कूपखननं...गृहे ।

....

....

(घ) आचारः...धर्मः।

....

....

3. **निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए—**

(क) तेजस्वीनाम् वयः...समीक्ष्यते ।

(ख) हितं मनोहारि च...वचः

(ग) गृहे वह्निना प्रदीप्ते कूपखननं न..भवति ।

4. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) मनोहर वचन बोलने चाहिए ।

....

(ख) गुणवान् मनुष्य का सब जगह सम्मान होता है ।

....

(ग) दुष्टजनों के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिए ।

....

(घ) संगठन से सब कार्य सफल होते हैं ।

....

(ङ) सदाचार मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है ।

....

व्याकरण–भाग

इकारान्त पुंल्लिग शब्द 'मुनि'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'मुनि' के समान चलते हैं —
ऋषि, कवि, गिरि, अग्नि, हरिः, कपि, रवि, इत्यादि ।

इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'नदी'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'नदी' के समान चलते हैं—

देवी, नारी, पुत्री, कुमारी, रजनी, पत्नी, राज्ञी, श्रीमती, विदुषी इत्यादि ।

उकारान्त पुंल्लिग शब्द 'साधु'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो	हे साधू	हे साधवः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'साधु' के समान चलते हैं—

गुरु, पशु, भानु, तरु, शत्रु, शिशु, वायु, मृत्यु, इन्दु, वायु इत्यादि ।

'युष्मद्' शब्द (तीनों लिंगों में समान होते हैं)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितोया	त्वाम् (त्वा)	युवाम् (वाम्)	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्याभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम् (वाम्)	युष्मभ्यम् (वः)
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः (वाम्)	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

'अष्मद्' शब्द (तीनों लिंगों में समान होते हैं)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्

द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

संख्यावाचक शब्द 'एक' के (गणनात्मक) तीनों लिंगों में रूप ('एक' शब्द के रूप सदा एकवचन में रहते हैं।)

विभक्ति	**पुँल्लिग**	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि=दो; तीनों लिगों में रूप

'द्वि' शब्द के स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में समान रूप होते हैं।

	पुँल्लिग	**स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग**
विभक्ति	**द्विवचन**	**द्विवचन**
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः

'त्रि' शब्द बहुवचन

विभक्ति	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	त्रिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

एक से पचास तक की गिनती संस्कृत में लिखी गई हैं —

१. एकः
२. द्वौ
३. त्रयः
४. चत्वारः
५. पञ्च
६. षट्
७. सप्त
८. अष्ट
९. नव
१०. दश
११. एकादश
१२. द्वादश
१३. त्रयोदश
१४. चतुर्दश
१५. पञ्चदश
१६. षोडश
१७. सप्तदश
१८. अष्टादश
१९. नवदश (एकोन विंशतिः)
२०. विंशतिः
२१. एकविंशतिः
२२. द्वाविंशतिः
२३. त्रयोविंशतिः
२४. चतुर्विंशतिः
२५. पञ्चविंशतिः
२६. षड्विंशतिः
२७. सप्तविंशतिः
२८. अष्टाविंशतिः
२९. नवविंशतिः
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिशत्
३४. चतुस्त्रिशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्

३७. सप्तत्रिंशत्	४४. चतुश्चत्वारिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्	४५. पञ्चचत्वारिंशत्
३९. नवत्रिंशत्	४६. षट्चत्वारिंशत्
४०. चत्वारिंशत्	४७. सप्तचत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्	४८. अष्टचत्वारिंशत्
४२. द्वाचत्वारिंशत्	४९. नवचत्वारिंशत्
४३. त्रयश्चत्वारिंशत्	५०. पञ्चाशत्

भू धातु=होना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् लकार (भूत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

लृट् लकार (भविष्य काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

पा धातु (पिब्) =पीना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लङ् लकार (भूत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधि लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

दृश् धातु (पश्य्) = देखना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् लकार (भूत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

कृ धातु=करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

धातु, लकार, प्रत्यय तथा प्रेरणार्थक क्रिया

धातु	लट्	लङ्	लोट्	लृट्	विधिलिङ्	क्त्वा	तुमुन्	प्रेरणार्थक क्रिया
पठ्	पठति	अपठत्	पठतु	पठिष्यति	पठेत्	पठित्वा	पठितुम्	पाठयति
(पढ़ना)	(पढ़ता है)	(पढ़ा)	(पढ़े)	(पढ़ेगा)	(पढ़ना चाहिए)	(पढ़कर)	(पढ़ने के लिए)	(पढ़ाता है)
पत्—गिरना	पतति	अपतत्	पततु	पतिष्यति	पतेत्	पतित्वा	पतितुम्	पातयति
हस्—हँसना	हसति	अहसत्	हसतु	हसिष्यति	हसेत्	हसित्वा	हसितुम्	हासयति
धाव्—दौड़ना	धावति	अधावत्	धावतु	धावष्यति	धावेत्	धावित्वा	धावितुम्	धावयति
खाद्—खाना	खादति	अखादत्	खादतु	खादिष्यति	खादेत्	खादित्वा	खादितुम्	खादयति
चल्—चलना	चलति	अचलत्	चलतु	चलिष्यति	चलेत्	चलित्वा	चलितुम्	चालयति
ज्वल्—जलना	ज्वलति	अज्वलत्	ज्वलतु	ज्वलिष्यति	ज्वलेत्	ज्वलित्वा	ज्वलितुम्	ज्वालयति
जप्—जपना	जपति	अजपत्	जपतु	जपिष्यति	जपेत्	जपित्वा	जपितुम्	जापयति
चर्—चरना	चरति	अचरत्	चरतु	चरिष्यति	चरेत्	चरित्वा	चरितुम्	चारयति
क्रीड्—खेलना	क्रीडति	अक्रीडत्	क्रीडतु	क्रीडिष्यति	क्रीडेत्	क्रीडित्वा	क्रीडितुम्	क्रीडयति
भू—होना	भवति	अभवत्	भवतु	भविष्यति	भवेत्	भूत्वा	भवितुम्	भावयति
गम्—जाना	गच्छति	अगच्छत्	गच्छतु	गमिष्यति	गच्छेत्	गत्वा	गन्तुम्	गमयति
वद्—बोलना	वदति	अवदत्	वदतु	वदिष्यति	वदेत्	उदित्वा	वदितुम्	वादयति
वांछ—चाहना	वांछति	अवांछत्	वांछतु	वांछिष्यति	वांछेत्	वांछित्वा	वांछितुम्	वांछयति
वस्—रहना	वसति	अवसत्	वसतु	वत्स्यति	वसेत्	उषित्वा	वस्तुम्	वासयति
नम्—झुकना	नमति	अनमत्	नमतु	नंस्यति	नमेत्	नत्वा	नन्तुम्	नमयति
पच्—पकाना	पचति	अपचत्	पचतु	पक्ष्यति	पचेत्	पक्त्वा	पक्तुम्	पाचयति

स्था—ठहरना	तिष्ठति	अतिष्ठत्	तिष्ठतु	स्थास्यति	तिष्ठेत्	स्थित्वा	स्थातुम्	स्थापयति
दा—देना	यच्छति	अयच्छत्	यच्छतु	दास्यति	यच्छेत्	दत्त्वा	दातुम्	दाययति
पा—पीना	पिबति	अपिबत्	पिबतु	पास्यति	पिबेत्	पीत्वा	पातुम्	पाययति
गै—गाना	गायति	अगायत्	गायतु	गास्यति	गायेत्	गीत्वा	गातुम्	गाययति
जि—जीतना	जयति	अजयत्	जयतु	जेष्यति	जयेत्	जित्वा	जेतुम्	जाययति
नी—ले जाना	नयति	अनयत्	नयतु	नेष्यति	नयेत्	नीत्वा	नेतुम्	नाययति
तृ—तैरना	तरति	अतरत्	तरतु	तरिष्यति	तरेत्	तीर्त्वा	तर्त्तुम्	तारयति
हृ—हरना	हरति	अहरत्	हरतु	हरिष्यति	हरेत्	हृत्वा	हर्त्तुम्	हारयति
लिख्—लिखना	लिखति	अलिखत्	लिखतु	लेखिष्यति	लिखेत्	लिखित्वा	लेखितुम्	लेखयति
मिल्—मिलना	मिलति	अमिलत्	मिलतु	मेलिष्यति	मिलेत्	मिलित्वा	मेलितुम्	मेलयति
सिच्—सींचना	सिञ्चति	असिञ्चत्	सिञ्चतु	सेक्ष्यति	सिञ्चेत्	सिक्त्वा	सेक्तुम्	सेचयति
नृत्—नाचना	नृत्यति	अनृत्यत्	नृत्येतु	नर्तिष्यति	नृत्येत्	नर्तित्वा	नर्तितुम	नर्तयति
दिव्—चमकना	दीव्यति	अदीव्यत्	दीव्यतु	देविष्यति	दीव्येत्	देवित्वा	देवितुम्	देवयति
क्रुध—क्रोध करना	क्रुध्यति	अक्रुध्यत्	क्रुध्यतु	क्रोत्स्यति	क्रुध्येत्	क्रुद्ध्वा	क्रोद्धम्	क्रोधयति
सिव्—सीना	सीव्यति	असीव्यत्	सीव्यतु	सेविष्यति	सीव्येत्	सेवित्वा	सेवितुम्	सेवयति
नश्—नष्ट होना	नश्यति	अनश्यत्	नश्यतु	नक्ष्यंयति	नश्येत्	नष्ट्वा	नष्टुम्	नाशयति
तुष्—प्रसन्न होना	तुष्यति	अतुष्यत्	तुष्यतु	तोक्ष्यति	तुष्येत्	तुष्ट्वा	तोष्टुम्	तोषयति
लुभ्—लोभ करना	लुभ्यति	अलुभ्यत्	लुभ्यतु	लोभिष्यति	लुभ्येत्	लुब्ध्वा	लोब्धुम्	लोभयति
श्रम्-परिश्रम करना	श्राम्यति	अश्राम्यत्	श्राम्यतु	श्रमिष्यति	श्राम्येत्	श्रान्त्वा	श्रान्तुम्	श्रमयति
त्रस्—डरना	त्रस्यति	अत्रस्यत्	त्रस्यतु	त्रसिष्यति	त्रस्येत्	त्रसित्वा	त्रस्तुम्	त्रासयति
सिध्—सिद्ध होना	सिध्यति	असिध्यत्	सिध्यतु	सेत्स्यति	सिध्येत	सिद्ध्वा	सेद्धुम्	सेधयति

चुर्—चुराना	चोरयति	अचोरयत्	चोरयतु	चोरयिष्यति	चोरयेत	चोरयित्वा	चोरयितुम्	चोरयति
चिन्त्—चिन्ता करना	चिन्तयति	अचिन्तयत्	चिन्तयतु	चिन्तयिष्यति	चिन्तयेत्	चिन्तयित्वा	चिन्तयितुम्	चिन्तयति
कथ्—कहना	कथयति	अकथयत्	कथयतु	कथयिष्यति	कथयेत्	कथयित्वा	कथयितुम्	कथयति
तड्—पीटना	ताडयति	अताडयत्	ताडयतु	ताडयिष्यति	ताडयेत्	ताडयित्वा	ताडयितुम्	ताडयति
तुल्—तोलना.	तोलयति	अतोलयत्	तोलयतु	तोलयिष्यति	तोलयेत्	तोलयित्वा	तोलयितुम्	तोलयति
पूज्—पूजना	पूजयति	अपूजयत्	पूजयतु	पूजयिष्यति	पूजयेत्	पूजयित्वा	पूजयितुम्	पूजयति
पाल्—पालना	पालयति	अपालयत्	पालयतु	पालयिष्यति	पाल्येत्	पालयित्वा	पालयितुम्	पालयति
गण्—गिनना	गणयति	अगणयत्	गणयतु	गणयिष्यति	गणयेत्	गणयित्वा	गणयितुम्	गणयति

प्रेरणार्थक धातुओं के रूप चुर् आदि धातुओं के समान चलते हैं। इसी प्रकार अन्य धातुओं के साथ प्रत्यय लगाकर शब्द बनते हैं।

अव्यय-शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अथ	आरम्भ/इसके पश्चात्	किन्तु/परन्तु	मगर
अत्र	यहाँ	परस्परम्	आपस में
तत्र	वहाँ	सततम्	निरन्तर, लगातार
यत्र	जहाँ	पृथक्	अलग
सर्वत्र	सब जगह	पश्चात्	बाद में
अकस्मात्	अचानक	कुत्र	कहाँ
सहसा	अचानक	यदा	जब
अद्य	आज	कदा	कब
अधुना	अब	तदा	तब
अथवा	या	कथम्	क्यों/कैसे
वा	या	ततः	उसके बाद/फिर
अपि	भी	हि	क्योंकि
अन्यथा	नहीं तो	पूर्वम्	पहले
अतः	इसलिए	पुरा	प्राचीन काल में
अतीव	बहुत अधिक	सर्वदा/सदा	हमेशा
अधः	नीचे	च	और
तथा	उस प्रकार, वैसे	खलु	निश्चय
तथापि	तो भी	चिरम्	देर से
अद्यत्वे	आजकल	विना	बिना
आम्	हाँ	तावत्	तब तक

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
इतः	इधर	नोचेत्	नहीं तो
उतः	उधर	पुनः/पुनर्	फिर
इतस्ततः	इधर-उधर	प्रति	ओर
कुतः	किधर	प्रायः	बहुधा
इत्थम्	इस प्रकार	बहिः/बहिर्	बाहर
उच्चैः	ऊपर	यत्	कि
नीचैः	नीचे	यदि	यदि/अगर,
यथा	जिस प्रकार, जैसे	यद्यपि	अगरचे
उपरि	ऊपर	यतः	क्योंकि
एकदा	एक बार	शीघ्रम्	जल्दी
एव	ही	ह्यः	कल (बीता हुआ)
किम्	क्या	श्वः	कल (आने वाला)
सर्वतः	सब ओर	परश्वः	परसों
शनैः-शनैः	धीरे-धीरे	सह/साकम्	साथ
यावत्	जब तक	सार्धम्	साथ
न	नहीं		

नरेन्द्र भार्गव द्वारा मारुति एडवर्टाइजर्स, दिल्ली के लिए ग्राहक के कागज पर
हिन्दुस्तान आफसेट प्रेस, ए-26, फेज II, नारायना, नयी दिल्ली में मुद्रित।